Date 26/03/19 ① 26/4/20

अध्याय – 5

जनजातीय लोगों की समस्या

भारत में गरीबी (निर्धनता)

(RURAL POVERTY)

भारतीय ग्रामीण समुदाय की सबसे बड़ी समस्या उसकी गरीबी है। भारतीय जनसंख्या का लगभग 50% भाग गरीबी की रेखा के नीचे निवास करता है। गरीबी से अभिप्राय (Meaning of Poverty) – गरीबी या निर्धनता उस अवस्था का नाम है जिसमें कोई व्यक्ति अपर्याप्त आय होने या अपव्यय होने के कारण अपने जीवन स्तर को इतना ऊँचा नहीं रख सकता है जिसे उसकी शारीरिक, मानसिक कार्य-कुशलता बनी रहे और उसको तथा उसके आश्रितों को समाज के स्तर के अनुसार जिसके वे सदस्य हैं, उपयोगी ढंग से कार्य करने योग्य बना रखा जा सके।

भारत में ग्रामीण निर्धनता का विस्तार ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिव्यक्ति 2400 कैलिरी को निर्धनता रेखा के नीचे समझा जाएगा। वर्ष 1979 में संसद में बताया गया था कि आयोग के मान मानदण्डों के अनुसार वर्ष 1977–78 में ग्रामीण क्षेत्रों में 51.82% तथा शहरी क्षेत्रों में 38.19% व्यक्ति गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे थे तथा समस्त भारत वर्ष में 48.4 तक पहुँच गया था यह प्रतिशत 1979–80 में 48.4 तक पहुँच गया था।

भारत में ग्रामीण निर्धनता के कारण

भारत में ग्रामीण निर्धनता के लिए अनेक कारण निम्नलिखित उत्तरदायी हैं जो निम्नलिखित हैं:–

A. व्यक्तिगत कारक :–

i. मानसिक दोष :– भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है तथा साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव रहता है और साथ ही अल्पाहार मिलता है बच्चों का उचित रूप से पालन–

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____

पोषण न होने से बच्चे अल्प बुद्धि ही रह जाते है। उचित प्रकार की शिक्षा भी नहीं मिल पाती है इस कारण ये लोग जीवन भर दूसरों पर आश्रित रहते है।

ii. शारीरिक दोष और बीमारियाँ :— शारीरिक दोष या बीमारियाँ से होनें दोष भी निर्धन बनानें में सहायक सिद्ध होती है। यदि कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से दोषपूर्ण है तो ऐसी दशा में उसको जीविका उपार्जन करने में बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है। जानकारी के अभाव में एवं चिकित्सा के अभाव में कई बच्चें पोलियों से अंगहिनता का शिकार बन जाते है।

iii. भाग्यवादिता पर विश्वास :— भारत में अधिकांश जनसंख्या द्वारा रुढ़िवादिता को महत्व देकर हर पहलू को भाग्य के आधार पर जाँचा जाता है। व्यक्ति यहाँ तक यह सोचकर निष्क्रिय हो जाते है कि भाग्य में ऐसा ही लिखा है। तथा वह जीवन भर निर्धनता की गोंद में पालतें है।

IV. मद्यपान :— भारत में अधिकांश ग्रामीण निर्धनता मद्यपान के कारण बढ़ती है व्यक्ति नशा करने हेतु अपनी और अपनी परिवार की मौलिक आवश्यकताऐं भी त्याग देते है। भारत में प्रतिदिन मद्यपान की आदत के अनेक लोग शिकार हो रहे है अतः मद्यपान भारत में ग्रामीण निर्धनता को बढ़ावा देने का प्रमुख कारण है।

V. बेकारी :— निर्धनता के व्यक्तिगत कारणों में से बेकारी भी एक कारण है। भारत में आज बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप धारण करते जा रही है।

II. भौगोलिक कारक :— कुछ भौगोलिक कारण भी भारत में ग्रामीण निर्धनता के लिए

Page No.

Date ___/___/___

उत्तरदायी है जो निम्नलिखित है :—

i. प्राकृतिक साधनों की कमी :— कुछ स्थानों की भूमि ऊसर (बंजर) होती है। कोयले एवं लोहे के उत्पादनों साधनों की कमी होती है खनिज पदार्थ उपलब्ध नहीं होते हैं वहाँ के व्यक्ति गरीब होते हैं। भारत के भौगोलिक कारणों में कई क्षेत्र तो ऐसे हैं जहाँ की ७० प्रतिशत जनसंख्या निर्धन है जैसे :- पहाड़ी क्षेत्रों की भूमि बिलकुल भी खेती करने योग्य नहीं होती है। राजस्थान में बहुत कम वर्षा होती है क्योंकि वहाँ मरुस्थल होता है। तथा कृषि के अतिरिक्त रोजगार के अन्य साधन उपलब्ध न होने के कारण लोग अत्यधिक निर्धन है।

ii. प्रतिकूल जलवायु तथा मौसम :— हिमालय पर्वतों के शिखर पर सदैव बर्फ पड़ती रहती है। राजस्थान भी ठीक इसी श्रेणी में आता है रेगिस्तान होने के कारण खेती नहीं हो पाती है और निर्धनता बढ़ती जाती है। अतः जलवायु और मौसम की प्रतिकूलता ग्रामीण निर्धनता पर गहरा प्रभाव डालती है।

iii. हानिकारक कीड़े :— भारत में जहाँ-तहाँ कीड़ों का आक्रमण होता रहता है जो फसलों को चौपट कर देती है इसके अतिरिक्त कई कीड़े ऐसे होते हैं जो गेहूँ, गन्ना, धान, आदि फसलों को नष्ट कर देती है कभी-कभी तो व्यापारियों द्वारा एकत्रित अनाज को भी ये कीड़े नष्ट कर देती है। जिसके फलस्वरूप लगभग फसलों का २०% भाग कीड़े खा जाते है। यह नष्ट कर देते है इस प्रकार व्याप्त निर्धनता को प्राप्त करता है।

iv. प्राकृतिक विपदाएँ :— प्राकृतिक विपदाएँ जैसे :- अधिक वर्षा का होना या कम वर्षा का होना, ज्वालामुखी का विस्फोट, भूचाल द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में खलबली मचा देते हैं। भारत की कृषि आज भी वर्षा

Page No.

Scanned with CamScan

Date ___/___/___

पर निर्भर है। वर्षा कम होने से अकाल का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी भयंकर वर्षा का प्रकोप होने से बाढ़ से करोड़ों रूपए की फसलें नष्ट हो जाती हैं। ये प्राकृतिक विपदाएँ भी भारत में ग्रामीण निर्धनता के लिए उत्तरदायि रही है।

Date 7/03/19

III. आर्थिक कारक :- (Economic Factor)

1. कृषि का पिछड़ापन :- भारत में अधिकांश जनजातियां कृषि पर निर्भर है हमारे देश में पुराने ढंग से खेती की जाती है। क्योंकि अशिक्षित होने के कारण किसानों को नवीनतम वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करना नहीं आता है। भारत में सिंचाई व्यवस्था, रसायनिक खाद, एवं की अच्छे बीजों का अभाव होने से कृषि आज भी केवल जीविका उपार्जन का साधन मानी जाती है।

2. कृषि पर अत्यधिक निर्भरता :- भारत में अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है एक परिवार के पास थोड़ी-सी जमीन होती है तथा सभी व्यक्ति मिलकर रहते हैं। तथा कम जमीन होने से पालन-पोषण कठिनता से हो पाता है। और कृषि पर ही निर्भर होने के कारण व्यक्ति गरीब होते हैं

3. उद्योग धन्धों का अभाव :- वर्तमान समय में भारत में उद्योग धन्धों का समुचित विकास नहीं हो सका है। उद्योग धन्धों के अभाव के कारण भी चारों ओर गरीबी का साम्राज्य दिखाई पड़ता है।

4. उद्योगों असंतुलित विकास :- 20वी शताब्दी के बाद औद्योगिक विकास का अवसर प्राप्त हुआ है किन्तु ब्रिटिश शासन की उदासीनता के कारण कुटीर-उद्योगों को संरक्षण नहीं मिल पाया था। इस स्थिति ने बेकारी को जन्म दिया है।

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

5. बढ़ती महगाई :— भारत में बढ़ती हुई महगाई ने विकराल रूप धारण कर लिया है इससे व्यक्ति अपने परिवार की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ रहता है आज हमारे देश में लगभग 70% जनसंख्या निर्धनता की श्रेणी में आती है।

6. कम पूँजी :— पूँजी उचित मात्रा में नहीं मिल पाने से देश का विकास स्थिर है। जबकि जनसंख्या बढ़ती जा रही है। वस्तुओं के मूल्य बढ़ रहे है ये सभी कारण निर्धनता को बढ़ावा दे रहे है।

7. परिवाहन एवं संचार के उचित साधनों की कमी :— हमारे देश का पहाड़ी क्षेत्र आज भी हजारों साल पुराना परंपरागत समुदाय दिख पड़ता है। यहाँ परिवाहन और संचार के साधनों के अभाव में प्राकृतिक साधनों जैसे :— जंगलों आदि का कम उपयोग हो पाया है। बहुत से क्षेत्रों में अभी भी साल भर सड़कों परिवाहन योग्य सड़कों का अभाव है।

IV. सामाजिक कारक (Social Factor)

I. जाति प्रथा :— जाति प्रथा के कारण लोगों को परंपरागत व्यवसाय अरुचि न होते हुए भी करने पड़ते है। इस प्रथा के कारण समाज में श्रम की गरिमा' का महत्व नही पनप पाया है। जिस कारण उच्च वर्ग के लोगों ने निम्न व्यवसायों को स्वीकार नहीं किया। बल्कि भूखा मरना स्वीकार किया, इससे देश में निर्धनता बढ़ती गई है।

II. संयुक्त प्रणाली :— संयुक्त प्रणाली परिवार प्रणाली व्यक्ति के रूप अन्दर अलसाय उत्पन्न हो जाता है बाल विवाह को बढ़ावा मिलता है। इन सब कारणों से निर्धनता बढ़ती चली जाती है।

Scanned with CamScan

Date __/__/__

3. सामाजिक कुप्रथाएँ :— भारत वर्ष में कई कुप्रथाएँ जैसे :— दहेज प्रथा, बाल विवाह, परदाप्रथा आदि प्रचलित है। जिससे अनेक हानियाँ होती है। और ये भी निर्धनता बनाए रखने में समाज में सहायक होती है।

4. अशिक्षा :— भारत में हर बात का सम्बन्ध भाग्य तथा कर्म (धर्म) से जोड़ा जाता है। वृद्ध व्यक्ति के मरने पर अशिक्षित लोग कर्ज लेकर भी हजारों रुपये व्यय करते है। तथा निर्धनता के पीढ़ियों में जकड़े रहना पसन्द करता है।

5. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली :— हमारे देश में शिक्षा प्रणाली बहुत बड़ी दूषित है। दूषित शिक्षा प्रणाली व्यक्ति को निष्क्रिय बना रही है जिससे समाज में बेरोजगारी बढ़ रही है। और अनेक प्रकार की समस्याओं का जन्म हो रहा है।

6. जनसंख्यात्मक कारक :— आधुनिक युग में बेकारी एवं निर्धनता के लिए जनसंख्या पर एक मूल कारक कहा जा सकता है हमारें देश में भी 50 वर्षों में जनसंख्या में विस्फोटक वृद्धि हुई है जिसका मूल कारण अधिक जन्म-दर है। बढ़ती जनसंख्या विकास के सभी साधनों को कमजोर कर देती है तथा विकास दर को कुण्ठित कर देती है। इस स्थिति में बेरोजगारी, खाद्य-सामग्री की कमी आदि हो जाती है और निर्धनता बढ़ने लगती है।

Scanned with CamScanner

Date 28/03/19

(7)

8. अशिक्षा (Illiteracy)

ग्रामीण भारत में निर्धनता के निवारण के उपाय निम्नलिखित हैं :—

1. **कृषि में सुधार :—** भारत में एक कृषि प्रधान है इस कारण कृषि में उन्नति करना अत्यंत आवश्यक है इसके लिए भूमि व्यवस्था में सुधार होना चाहिए किसानों को सिंचाई की अधिक से अधिक सुविधाएँ मिलना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कृषि के नये उपकरणों अच्छी खाद और संघहन खेती के प्रयोग द्वारा स्थिति में सुधार किया जा सकता है कृषि की दशा में सुधार होने से देश की भावी निर्धनता अपने आप ही समाप्त हो जाएगी।

2. **शक्ति के साधनों का पूर्ण उपयोग :—** ग्रामीण भारत में निर्धनता को दूर करने के लिए शक्ति के साधनों का विकास अत्यंत आवश्यक है जल शक्ति का पूर्ण उपयोग होने से ग्रामीणों को सिंचाई की अत्यधिक सुविधाएँ प्राप्त हो सकेगी। जल विद्युत के उत्पादन से नए एवं पुराने उद्योगों को भी प्रोत्साहन मिल सकेगा।

3. **उद्योगों का समुचित विकास :—** भारत गाँवों का राष्ट्र है अतः ग्रामीण भारत में उद्योगों की उन्नति से देश के बड़े भाग को रोजगार मिलेगा और कुल उत्पादन में वृद्धि होगी। अत्यधिक कुटीर उद्योगों से देश की बेरोजगारी दूर कर सकती है लेकिन उत्पादन बढ़ाने निर्यात करने के लिए भारी उद्योगों धन्धों का विकास भी आवश्यक है) दूसरी उत्पादक वस्तुओं की उन्नति के साथ ही देश में निर्धनता की समस्या बहुत बड़ी सीमा तक समाप्त हो सकती है।

4. **परिवार नियोजन :—** ग्रामीण भारत में निर्धनता का

Page No.

Date ___/___/_____

मुख्य कारण अति जनसंख्या भी है। परिवार नियोजन का अधिक से अधिक प्रचार एवं प्रयोग करें जनसंख्या को कम किया जा सकता है सीमित परिवारों से प्रतिव्यक्ति आय बढ़ेगी और रहन-सहन के स्तर में उन्नति होगी।

5. सामाजिक ~~दुर्~~दुर्व्यसनों पर नियंत्रण :— सामाजिक दुर्व्यसनों को नियंत्रण करके ही निर्धनता की समस्या को सुलझाया जा सकेगा। वेश्यावृत्ति, जुआखोरी एवं शराबखोरी से आदि से व्यक्तियों की रक्षा करने के लिए सामाजिक कानूनों को अधिक कठोर बनना आवश्यक है। इन दुर्गुणों को दूर किये बिना निर्धनता को दूर करने की कल्पना करना भी व्यर्थ है।

6. स्वास्थ्य के स्तर में सुधार :— समाज में परिवार को स्वास्थ्य बनाने से निर्धनता को दूर किया जा सकता है। अच्छे स्वास्थ्य से कार्यकुशलता में वृद्धि होने से प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होती है। अतः जनता के उत्तम स्वास्थ्य हेतु सरकार, समाज सेवियों आदि सभी को प्रयत्न करना चाहिए।

7. ~~साख~~-साख सुविधाओं में वृद्धि :— आर्थिक विकास के लिए बैंकिंग तथा साख सुविधाओं की व्यवस्था करना भी आवश्यक है। किसानों को ऋण की सुविधाएँ देने के साथ ही ऋण मिलने की प्रक्रिया इतनी सरल होनी चाहिए कि अधिक से अधिक किसान इसका लाभ उठा सकें।

8. सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन :— निर्धनता के निवारण के लिए सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन किया जाना भी आवश्यक है सर्वप्रथम अंधविश्वास

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

के विरुद्ध जनमत का निर्माण करके व्यक्तियों के आय को एक बहुत बड़ा भाग को अपव्यय से बचाया जा सकता है। दूसरे संयुक्त परिवारों को प्रोत्साहित करने से भी निर्धनता की समस्या में कुछ सुधार किया जा सकता है। एकाकी परिवारों के संख्या बढ़ने से व्यक्ति को अधिक श्रम करने तथा अधिक आय अर्जित करने के लिए अधिक प्रोत्साहन प्राप्त होगा। भारत में विवाह संस्था से सम्बन्धित बुराईयों जैसे :- दहेज प्रथा, जाति भोज, आदि को दूर करके भी निर्धनता की समस्या को कुछ कम किया जा सकता है और अन्त में जाति व्यवस्था का प्रभाव घटने से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि और योग्यता के अनुरूप व्यवसाय करने का अवसर मिलेगा और इस प्रकार उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। इस प्रकार निर्धनता के समस्या के निवारण के लिए सामाजिक संस्थाओं के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन होना आवश्यक है।

Date 29/03/19

निर्धनता दूर करने में सरकार के प्रयत्न
(Efforts of Government to Remove poverty)

1. कृषि का विकास :- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार ने कृषि के विकास को सर्वोच्च लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया है। इस सम्बन्ध में छोटी व बड़ी सिंचाई की योजनाओं द्वारा ग्रामीणों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त ऐसी भूमियों को, जो खेती के योग्य नहीं थी। फिर से खेती के योग्य बनाने का सफल प्रयत्न किया गया है। कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्नत खाद एवं दूसरे उर्वरक पदार्थों का भी सरकार आवश्यकतानुसार वितरण कर रही है। इसके अतिरिक्त सहकारी भण्डारों एवं दूसरे साधनों द्वारा कृषि बिक्री का भी उचित प्रबन्ध किया गया है। भारत सरकार ने एक नीति के रूप में यह स्वीकार किया है कि भविष्य में अधिकांश उद्योग तथा आर्थिक नीतियाँ कृषि के विकास को आधार मानकर ही क्रियान्वित की जाएगी।

Page No.

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____

२. **रोजगार की सुविधाएँ :-** सरकार ने निर्धनता दूर करने के लिए रोजगार सुविधाओं में व्यापक वृद्धि की है। प्रत्येक जिले में एक 'रोजगार केन्द्र' की स्थापना की है जो बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार देने की व्यवस्था करता है। सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के भिन्न-भिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, लेकिन आजादी के ६८ वर्ष बाद भी देश में बेरोजगारी समाप्त नहीं हो सकी है।

३. **सामुदायिक विकास योजनाएँ :-** सामुदायिक विकास योजनाओं को सफल बनाने के लिए बड़ी मात्रा में धन व्यय किया जा रहा है। इससे ग्रामीणों का चहुँमुखी विकास होकर उनकी आय में वृद्धि हो रही है। सामुदायिक विकास योजनाओं के अन्तर्गत पशु-पालन, कृषि विस्तार, सिंचाई, भूमि-सुधार आदि क्षेत्र में करोड़ों रुपये व्यय किये गये हैं।

४. **कुटीर उद्योग धन्धों का विकास :-** कुटीर उद्योग धन्धों का विकास भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए निर्धनता दूर करने के क्षेत्र में सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रयत्न है। निर्धनता को दूर करने में कुटीर तथा लघु उद्योगों का महत्व इसी बात से स्पष्ट होता है कि इस समय हमारे देश में लगभग ५ करोड़ व्यक्ति इन उद्योगों के द्वारा ही जीविका उपार्जित कर रहे हैं।

५. **अन्त्योदय योजना :-** महात्मा गाँधी के आदर्शों के आधार पर देश में अन्त्योदय योजना तैयार की गई जिसे देश के अनेक राज्यों में लागू कर दिया गया। इस योजना का उद्देश्य गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले सबसे निर्धन परिवारों का आर्थिक विकास कर उनके लिए रोजगार उपलब्ध कराना है। यदि इस योजना को सही रूप से लागू किया जाता है तो इससे भूख और अभाव से पीड़ित सबसे अभावग्रस्त परिवारों को अत्यधिक लाभ मिल सकता था।

प्रयत्नों के अतिरिक्त सरकार ने अनेक सामाजिक

अधिनियम भी बनाये है जिनसे व्यापारियों में अपवंचन की प्रवृत्ति को रोका जा सके। साख-सुविधाओं के द्वारा ग्रामीणों को महाजनों के आर्थिक शोषण से बचाने का भी प्रयत्न किया गया है। इन सभी प्रयत्नों के बाद भी प्रत्येक प्रति व्यक्ति आय में उतनी वृद्धि नहीं हो सकी है जितनी आशा की गई थी। सम्भवतः इसका प्रमुख कारण देश में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि और राष्ट्रीय आय का असमान वितरण होना है। महंगाई के फलस्वरूप हमारे रहन-सहन के स्तर में कोई भी उल्लेखनीय सुधार नहीं हो सका है। इस प्रकार आज निर्धनता से छुटकारा पाना तभी संभव हो सकता है जब हम दलबन्दी और व्यक्तिगत दलदल से निकल कर राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च स्थान दे।

Stop